BBC (Autonomous)

FYUGP (Sem-1)

2024

HINDI

Paper : HIN-MJ-01-B-01-04

HIN-MN-01-B-01-04

Hindi Sampreshan

हिन्दी सम्प्रेषण

Full Marks : 60

Time : 2½ hrs

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1× 8=8

   क) हिन्दी में व्यंजन वर्णों की संख्या कितनी हैं ?

   ख) मात्रा की दृष्टि से स्वर कितने प्रकार के होते हैं ?

   ग) तालु से उच्चरित किसी एक ध्वनि का नाम लिखिए ?

   घ) प्रात:काल के समय 'अभिवादन' के रूप मे प्रयोग होनेवाले एक शब्द लिखिए।

   ङ) 'सम्प्रेषण' का अर्थ क्या है ?

   च) औपचारिक पत्र के अंत में अभिवादन कैसे किया जाता है ?

   छ) 'अंत भला तो सब भला' लोकोक्ति का अर्थ क्या है ?

   ज) 'आँखों का तारा' मुहावरे का अर्थ लिखिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से **किन्हीं छः** के उत्तर अत्यन्त संक्षेप में दीजिए : 2×6=12

   क) 'मौखिक सम्प्रेषण' की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

   ख) दाँत और जीभ के स्पर्श से बोले जानेवाले दो ध्वनियों के नाम लिखिए।

   ग) आत्मीयजनों के साथ बातचीत का एक लिखित उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

   घ) माताजी को पत्र लिखते समय सम्बोधन और स्वनिर्देश के रुप में क्या क्या लिखे जाते हैं ?

ङ) 'ईद का चाँद होना' और 'नाक कट जाना' – इन दो मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

च) 'मुँह' पर बने किन्हीं चार मुहावरों का अर्थ सहित उल्लेख कीजिए।

छ) स्वर और व्यंजन वर्ण में निहित कोई दो अंतर लिखिए।

ज) स्वर्श संघर्षी व्यंजन किसे कहते हैं, स्पष्ट कीजिए।

झ) किसी दुकानदार से बातचीत करने का एक उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

ञ) समाचार पत्र के संपादक का मूल कार्य क्या होता है स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से **किन्हीं चार** के उत्तर संक्षेप में दीजिए : 5×4=20

क) सम्प्रेषण की मूल विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

ख) साक्षात्कार के प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

ग) 'पुस्तक पढ़ने की उपयोगिता' विषय को अपने अनुजों को समझाते हुए वार्तालाप का एक उदाहरण स्पष्ट कीजिए।

घ) सेंटिनल अखबार के कार्यालय में हिंदी अनुवादक के पद के लिए संपादक महोदय को एक आवेदन पत्र लिखिए।

ङ) अपने नाम पर डाकघर में बचत खाता खोलने के सन्दर्भ में डाकघर के अधिकारी के साथ होनेवाली बातचीत का एक नमूना तैयार कीजिए।

च) अपने महाविद्यालय में आयोजित वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

छ) अर्थ लिखकर निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
अंक भरना, अंधे की लाठी, आग में घी डालना, गड़े मुर्दे उखाड़ना, चार चाँद लगाना।

ज) उपयुक्त शीर्षक देकर निम्नलिखित गद्यांश का एक तिहाई में संक्षेपण कीजिए :

धन के लोभ ने मानवों को पूर्ण रूप से अपने अधीन कर लिया है। कुलीनता और शराफत, गुण और कमाल की कसौटी, पैसा और केवल पैसा है। जिसके पास पैसा है, वह देवता स्वरूप है, उसका अन्त:करण कितना ही काला क्यों न हो। साहित्य, संगीत और कला सभी धन की देहली पर माथा टेकनेवालों में हैं। यह हवा इतनी जहरीली हो गई है कि

इसमें जीवित रहना कठिन होता जा रहा है। डाक्टर और हकीम हैं कि बिना लम्बी फीस लिए बात नहीं करते। गुण और योग्यता की सफलता उसके आर्थिक मूल्य के हिसाब से मानी जा रही है। इस पैसे ने आदमी के दिलो-दिमाग पर इतना कब्जा कर लिया है कि उसके राज्य पर किसी और से भी आक्रमण करना कठिन दिखाई देता है। वह दया और स्नेह, सच्चाई और सौजन्य का पुतला मनुष्य दया-नम्रता शून्य और जड़-यन्त्र बनकर रह गये हैं।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से **किन्हीं दो** के सम्यक उत्तर दीजिए। $10\times2=20$

क) अपने इलाके की सड़कों की दयनीय हालत की ओर विभागीय मन्त्री का ध्यान आकृष्ट कराने के लिए समाचार पत्र के सम्पादक के नाम एक पत्र लिखिए।

ख) 'क्रोध एक तरह का रोग होता है, जिसे क्षणिक पागलपन भी कह सकते हैं।' - राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के इस कथन का पल्लवन कीजिए।

ग) साक्षात्कार से पूर्व किन किन बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है उदाहरण सह स्पष्ट कीजिए।

घ) निम्नलिखित किसी एक विषय पर निंबध लिखिए।

अ) समय अमूल्य धन है।

आ) शिक्षा का महत्व।

इ) अपने घरों में बुजुर्गों का महत्व।

ङ) निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जीवन तीन तरह का होता है। पहला परोपकारी जीवन, दूसरा सामान्य जीवन और तीसरा अपकारी जीवन। इसे उत्तम, मध्यम और अधम भी कहते हैं। उत्तम जीवन उनका होता है, जिन्हें दूसरों का उपकार करने में सुख का एहसास होता है, भले ही उन्हें कष्ट या नुकसान उठाना पड़े। इसे यज्ञीय जीवन भी कहा जाता है। यही दैवत्वपूर्ण जीवन है। इस जीवन का आधार यज्ञ होता है। शास्त्र में यज्ञ उसे कहा गया है, जिनसे प्राणीमात्र का हित होता है, यानी जिन कर्मों से समाज में सुख, ऐश्वर्य और प्रगति

में बढ़ोत्तरी होती है। चारों वेदों में कहा गया है धरती का केंद्र या आधार यज्ञपूर्ण जीवन ही है, यानी सत्कर्मों पर ही यह धरती टिकी हुई है। इसलिए कहा गया है कि यदि पृथ्वी को बचाना है तो श्रेष्ठ कर्मों की तरफ समाज को तगातार प्रेरित करने के लिए कार्य करना चाहिए। सामान्य जीवन वह होता है जो परंपरा के मुताबिक चलता है। यानी अपना और दूसरे का स्वार्थ सधता रहे। कोई बहुत ऊँची समाजोत्थान या परोपकार ही भावना नहीं होती है। अपकारी यानी दूसरों को परेशान और दुख देने वाला जीवन ही राक्षसी जीवन या शैतानी जिंदगी कही जाती है। इस तरह के जीवन से ही समाज में सभी तरह की समस्याएँ पैदा होती हैं। इस धरती को यदि समस्याओं और हिंसा से मुक्त करना है तो दैवत्वपूर्ण जीवन की तरफ विश्व और समाज को चलना पड़ेगा। सत्कर्म तभी किए जा सकते हैं, जब हम सोच-विचार कर कर्म करेंगे। विचार के साथ किया हुआ कर्म ही अपना हित तो करता है परिवार, समाज और दुनिया का भी इससे भला होता है। जितना हम प्राणीहित के लिए संकल्पित होंगे, उतना हमारा बौद्धिक और आत्मिक उत्थान होता जाएगा। हमारे अंदर मनुष्यता के भाव लगातार बढ़ते जाएँगे। प्रेम, दया करुणा, अहिंसा, सत्य और सद्‌भावना की प्रवृत्ति लगादार बढ़ती जाएगी और ये सारे गुण ही जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए जरूरी माने गए हैं।

प्रश्नावली :

अ) यज्ञीय जीवन किसे कहा गया है ?

आ) सामान्य जीवन क्या है ?

इ) धरती को सभी समस्याओं से मुक्त करने के लिए हमें क्या करना होगा ?

ई) जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए क्या जरूरी है ?

उ) शास्त्र में यज्ञ किसे कहा गया है ?

****